1 ''एक को प्रत्यक्ष करने के लिए एकरस स्थिति बनाओ, स्वमान में रहो, सबको सम्मान दो''

15.10.04

2 परमात्म पालना, पढ़ाई और वरदानो के श्रेष्ठ भाग्य के सितारे सारे विश्व में और किसी के भी मस्तक में चमकते हुए नजर नहीं आयेंगे। बापदादा का प्यार हरेक बच्चे से एक दो से ज्यादा है और यह परमात्म प्यार ही सब बच्चों की विशेष पालना का आधार है।

3 दिल से, मुहब्बत से कहो मेरा बाबा तो मेहनत मुहब्बत में बदल जायेगी। मेरा बाबा कहने से ही बाप के पास आवाज पहुंच जाता है और बाप एक्सट्रा मदद देते हैं। लेकिन है दिल का सौदा, जुबान का सौदा नहीं।

4 वर्तमान समय प्रमाण बापदादा यही चाहते हैं कि हरेक बच्चे की स्वपरिवर्तन की रफ्तार तेज हो, जैसे कागज में सेकेण्ड में बिन्दी लगती है उससे भी फास्ट परिवर्तन में जो अयर्थाथ है उसमें बिन्दी लगे।

5 कोई कुछ भी करता है, कहता है, व्हाई-व्हाई नहीं करो, फ्लाई करो, वाह ड्रामा वाह। यह क्यों करता है, यह क्यों कहता है। नहीं। यह चाहिए, चाहिए जो संकल्प मात्र में भी होता है यह वेस्ट थॉटस बेस्ट बनने नहीं देता है।

6 वेस्ट संकल्प का वजन भारी होता है जो पुरूषार्थ को भारी कर देता है। वेस्ट को कम करने के लिए दो शब्द स्वमान और सम्मान संकल्प, बोल और कर्म में प्रैक्टिकल में लाओ। स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है। कोई कैसा भी है, हमें सम्मान देना है। सम्मान देना ही स्वमान में स्थित होना है दोनों का बैलेन्स चाहिए।

7 शुभ संकल्प जो स्वउन्नति की लिफ्ट है, वह कम होने कारण मेहनत की सीढ़ी चढ़नी पड़ती है। ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् आपस में हर समय शुभ भावना और शुभ कामना। आत्मा वा बाप के स्मृति की बिन्दी वृति से, दृष्टि से गायब नहीं हो। सम्मान देना अर्थात सम्मान लेना। किसी को भी मान देना समझो माननीय बनना।

8 आत्मिक प्यार की निशानी है - दूसरे की कमी को अपनी शुभ भावना शुभ कामना से परिवर्तन करना। अभी रहम की खान बन जाओ। यह बदल जाये, यह ऐसा हो, यह ऐसा करे, वह शिक्षा से नहीं होगा लेकिन सम्मान दो तो जो मन में संकल्प रहता है वह करने लग जायेंगे। वृति से बदलेंगे, बोलने से नहीं बदलेंगे।

9 वह कहें कि जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं वह ज्ञान है। अभी यह अनुभव कराओ। हर समय दिल में बाबा, बाबा, बाबा हो.....अब ऐसे कोई ग्रुप निकले। लास्ट परिवर्तन है एक है, एक है, एक है, वह तब होगा जब ब्राह्मण परिवार एकरस स्थिति वाले हो जायें।

10 बापदादा वरदान दे रहे हैं - बीती को बीती कर बिन्दी लगाए, बिन्दी बन बिन्दू बाप को याद करो। अभी चलते-फिरते साधारण नहीं दिखाई दो, फरिश्ते दिखाई दो।

ओम् शान्ति जी